

आरतीकरतनीगमहरीदासा ॥ हरीहरीअगंम
 अगोचरअविगतवासा ॥ १ ॥ दुसरीआरतीदी
 रघसुरतकी ॥ वीष्णवकीटअनंतसुरतकी ॥ आ
 रतीकरतनीगंम ॥ २ ॥ तीसरीआरतीतरमव
 तोरे ॥ फरसरांमआइकरजीरे ॥ आरतीकरत
 ३ ॥ चौथीआरतीसकलचराचर ॥ कलमलजोस
 अषंडुपरापर ॥ आरतीकरत ॥ ४ ॥ पंचमीआर
 तीपरगटपरसीत ॥ नीरमलरूपनीरंतरदर
 सीत ॥ आरती ॥ ५ ॥ सतजुगत्रेहेतावापरकलजु
 ग ॥ सीरगुणरूपधरोहरीनीरगुण ॥ आरतीक
 रत ॥ ६ ॥ जुगजुगमांहरीधरतसरीरा ॥ साहेबकु
 वेरसंतनसुषसीरा ॥ आरतीकरतनीगमहरी
 दासा ॥ हरीहरीअगमअगोचरअवीगतवासा
 ७ ॥ इतीसाहेबकुवेरमाहाराजकीआरतीसंपुर्णः ॥
 अथअस्तुतीलीष्यते ॥ स्वस्वयंसदपदंसर्वमोक्ष
 नायकं ॥ अहीतंगअनुसुतंभववीतंईश्वरं ॥ १ ॥
 तत्ववेतायतद्वतं ॥ सांमृथायसाक्षीयं ॥ मंगला
 यमाहादगतं ॥ अहंनमामीयांणपते ॥ २ ॥ देवधी
 यंचैतनेयदलोकंसहीतयंम ॥ व्यापीतंगवीश्व
 यंमअक्रेदंअनुरणे ॥ ३ ॥ नभगतंअनुभवेनवा
 रपाअंतयं ॥ अमल्लेषंअदनेजयेजयेतीकुवेर

आती

॥६२॥

केवले ॥४॥ इती श्री अस्तुती संपूर्णः ॥ अथ कुवे
रसाहेवमाहारजानो ज्ञानभक्ती वैरागती एषु ॥
प्रथं मगुरुवारं भवजे केवलपती ईश ॥ ज्ञानभक्ती
वैरागपद ॥ भाषुहसंमलसरेस ॥ सेही पत्र उ
दीतवृष जुगलभक्ती वैराग ॥ मध्यडी सुअंकुर
वीत ॥ सोनी जज्ञानवीभाग ॥ २ ॥ संजमत्री ये एक
तारस ॥ बहतवृक्ष अदसुत ॥ सहीतभक्ती वैराग
तीमु ॥ ज्ञानसरल अनुसुत ॥ ३ ॥ वृक्षपत्रवस्तरव
त ॥ तजेसजे अनुराग ॥ लोनी जज्ञानपुरससत
मुक्षराभक्ती वैराग ॥ ४ ॥ पेहेल उदीतत्रीयेमही
जेही ॥ सोनी जकहुअनाद्य ॥ सुनहो संतमस
सुध्यचीते ॥ धरी मंतमोद उलाद ॥ ५ ॥ पुरवआह
बीजगथकी ॥ उदीतभइतिअंकुर ॥ पुरी करंनपी
छुतेलीये ॥ जुगलसोपत्रसकुर ॥ ६ ॥ तेसेहीज्ञान
आगमथकी ॥ असुभतजेसुभराग ॥ रागअंग
भक्तीपद ॥ त्यागसोही वैराग ॥ ७ ॥ ज्यौबीजगअ
कुरसे ॥ पगटेपत्रपराग ॥ लोनी जज्ञानसुमरुथ
की ॥ उपजेभक्ती वैराग ॥ ८ ॥ तेहतेज्ञानसोआगुह
त्यागभक्तीसोहपीछ ॥ सर्वेसोहीसंमरुहीजी
नुअनुभवगत्यपीछ ॥ ९ ॥ त्रीयेतससुभदस्येक ॥
जीतेजेहकेअधीकार ॥ उसंममध्यमकनेष्टके